कलीसिया अध्याय 36

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **इब्रानियों 11-13**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (इब्रानियों 4-7) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख वचन]* **यूहन्ना के प्रमुख वचनों का पुनरावलोकन**

दो-दो लोग साथ मिलकर यूहन्ना रचित सुसमाचार से अन्तिम 5 याद की हुई वचनों का ***पुनरावलोकन*** करें।
(11) यूहन्ना 11:25-26। पुनरूत्थान और जीवन मैं हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा, और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्त काल त न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?
(12) यूहन्ना 12:32। और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खींच लूंगा।
(13) यूहन्ना 13:34-35। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेगें कि तुम मेरे चले हो।
(14) यूहन्ना 14:6 मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास तक नहीं पहुंच सकता।
(15) यूहन्ना 15:5। मैं दाखलता हूँ; तुम डालियां हो जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 16:1-33**

परिचय। **यूहन्ना 16:1-33** का एक साथ मिलकर अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययने के पांच तरीकों का इस्तेमाल करें। पद 14से 17 में यीशु मसीह के उपदेश व अन्तिम भोज पर की गयी प्रार्थना शामिल हैं।

15 अध्याय में चेलों को बताया गया था कि उन्हें क्या करना है, लेकिन अध्याय 16 में उसने बताया कि परमेश्वर अपने चेलों के लिए क्या करेगा।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 16:1-33 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

16:7-11

खोज 1. पवित्र आत्मा के काम।

पद 7. यीशु कहते हैं कि उसका जाना उसके चेलों के लिए अच्छा है, क्योंकि उसके जाने पर पवित्र आत्मा आएगा। यीशु मसीह का इस धरती से प्रस्थान को दुर्घटना नहीं थी, परन्तु वह एक विजय और बड़ा लाभ थी।

जब यीशु मसीह इस दुनिया में ही थे, वह अपने चेलों के साथ एक सीमित क्षेत्र में ही सक्रिय था। लेकिन उसके स्वर्ग में उठाये जाने और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद, यीशु मसीह सारी दुनिया में अपने चेलों के द्वारा रहने वाले थे!

इस समय में, मानव जाति के उद्धार के लिए यीशु को क्रूस को पर अपनी जान देना और मृतकों में से जीवित होना जरूरी था। उसके स्वर्गारोहण के बाद, यीशु अपने उद्धार की योजना के सम्पूर्ण कार्य को पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों हृदयों और उनके जीवन में कार्यान्वित करने वाला था।

पद 8. यीशु ने कहा, पवित्र आत्मा आकर, "*संसार को निम्नलिखित बातों के प्रति निरूत्तर* करेगा:

- पाप के विषय में, क्योंकि लोग यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते
- मसीह की धार्मिकता के विषय में, जो स्वर्ग मे अपनी अदृश्य उपस्थिति से लोगों का उद्धार करता है।
- न्याय के विषय में क्योंकि लोग दुष्ट अर्थात शैतान के दोषी ठहरने पर भी अपने अविश्वास में बढ़ते चले जाते हैं।

यूहन्ना 16:8 में पाये जाने वाले "निरूत्तर" के मूल शब्द (ग्रीक: elenchó) के अनेकों अच्छे मतलब हैं। पवित्र आत्मा का काम लोगों को पापों को *प्रगट* करना, उन्हें सत्य के प्रति *कायल* करना, उनके दोष के प्रति *निरूत्तर* करना और सत्य के विरूद्ध उनके तर्क का *खण्डन* करना है।

(1) पवित्र आत्मा संसार के पापों को प्रगट करेगा (पद 9)।

वह संसार को उसके पापों के प्रति निरूत्तर करता है। वह *संसार के पापों का खुलासा* करेगा अर्थात वह उन्हें नंगा करेगा, विशेषकर के इस तथ्य को कि संसार ने यीशु मसीह को अस्वीकार करे उसे मार दिया। वह लोगों के दोष भाव के बोध को नाश नहीं करेगा, जैसा कि आज लोग करने का प्रयास करते हैं, वरन वह बुराई और पाप की नफरत के प्रति लोगों के विवेक को जागरूक करेगा। वह संसार को स्वयं उसके ही पापों के प्रति जागरूक करेगा। क्योंकि लोग अपने पापों को पहिचानकर और उसे स्वीकार करके ही, वास्तव में पश्चाताप करके बच सकते हैं।

(2) पवित्र आत्मा संसार को सत्य के प्रति निरूत्तर करेगा (पद 10)।

वह संसार को सही के लिए निरुत्तर करता है, और मसीह सही है। यहां पर इस्तेमाल किया गया "संसार" यहूदियों को दर्शाता है, जो कि यीशु को क्रूस पर मारकर हत्यारे ठहरने वाले थे, अर्थात *एक अधर्मी जन* (यूहन्ना 18:30)। लेकिन पुनरूत्थान के माध्यम से यीशु पिता के पास गया। उसके पुनरूत्थान साबित करता है कि परमेश्वर पिता ने उसके उद्धार के काम को स्वीकार करके उस पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाकर उसे *धर्मी* घोषित कर दिया है (प्रेरितों 3:14-15)। जब परमेश्वर संसार का निरूत्तर करते हैं कि वह और उसका मसीह दोनो "सही" हैं, उसी समय पर वह संसार को दोषी भी ठहराते हैं कि संसार "गलत" है।

वह संसार को धार्मिकता के प्रति निरूत्तर करता है, कि जो लोग गलत हैं उन्हें मसीह की सिद्ध धार्मिकता की आवश्यकता है, जिसे उसने अपनी मृत्यु और मृतकों में से जी उठने के कारण प्रदान किया है और वे इसे केवल मसीह द्वारा क्रूस पर पूरे किये गये उद्धार में होकर विश्वास के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

(3) पवित्र आत्मा लोगों को उनके पापों के विषय में निरूत्तर करेगा (पद 11)।

वह संसार को परमेश्वर के सिद्ध न्याय के प्रति निरूत्तर करता है। पवित्र आत्मा हर एक जन को कायल करता है कि परमेश्वर का न्याय वास्तविक, धर्मी और एक गम्भीर मामला है। यीशु मसीह का अपने प्रथम आगमन के दौरान किया गया काम पाप, पापियों और पाप को बढ़ावा देने वालों (जैसे शैतान, जो संसार का सरदार है) के विरूद्ध न्याय है। यीशु इस संसार मे शैतान के कामों को खत्म करने के लिए आये (1 यूहन्ना 3:8)! उसके क्रूस पर उठाये जाने के द्वारा, उसके पुनरूत्थान के द्वारा, उसके स्वर्गारोहण और स्वर्ग में उसके सिंहासन पर विराजमान होन के द्वारा उसने संसार के सरदार को खदेड़ दिया है (यूहन्ना 12:31)! शैतान अब सदा काल के लिए दोषी ठहर चुका है!

पुराने नियम के दौरान, शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की सेना को संसार के बहुत से देशों पर अंधिकार व शक्ति प्राप्त थी (दानिय्येल 10:13,20-21)।

मसीह के प्रथम आगमन के दौरान, क्रूस पर, दुष्ट संसार और शैतान को दोषी ठहराया जा चुका है! यीशु मसीह के पहले आगमन का परिणाम मसीह का विरोध करने वाले, अस्विकार करने, विश्वासघात करने वाले और मसीह की पेशी के समय उस पर दोष लगाने वाले संसार का दोषी ठहराया जाना था। इसके परिणाम स्वरूप इस जगत का सरदार निकाल दिया गया (यूहन्ना 12:31; प्रकाशितवाक्य 12:5-9)! यीशु मसीह की मृत्यु, पुनरूत्थान और उसकी प्रधानता में स्वर्ग से राज्य ने जगत के राष्ट्रो पर शैतान की प्रभुता का अन्त कर दिया (इफिसियों 1:20-21; 1 पतरस 3:22)। शैतान को इस जगत की प्रभुता से निकाल दिया है, का अर्थ यह है कि यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन के बीच संसार भर में लाखों करोड़ों लोग यीशु के पास आ रहे हैं (यूहन्ना 12:32)! शैतान अब संसार के किसी भी देश में परमेश्वर के वचन को सुनाने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं कर सकता। वह संसार के किसी भी भाग में लोगों को यीशु मसीह के

द्वारा उद्धार प्राप्त करने से नहीं रोक सकता है। शैतान अब इस जगत में अपनी प्रभुता व अधिकार को खो चुका है और अब वह लाखों करोड़ों लोगों को उसके राज्य में से (1 यूहन्ना 5:18-19) निकालकर यीशु मसीह के राज्य में लाए जाने से नहीं रोक सकता (कुलुस्सियों 1:13; प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर, शैतान का पाप व दण्ड नरक की आग में डाले जाने पर सारे जगत के सामने प्रगट हो जाएगा (मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 20:10)। हर एक जन जो अभी भी शैतान की सुनता और यीशु मसीह का इनकार करता है वह शैतान के साथ ही नरक में डाल दिया जाएगा।

16:12-15

खोज 2. **पवित्र आत्मा के कार्य।**

(1) उस समय तक सत्य के प्रकाशन से जुड़ा काम पूरा नहीं हुआ था (पद 12)।

यीशु ने कहा, "मुझे तुमसे और बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।" यीशु मसीह ने अपने चेलों के सामने पूरा प्रकाशन नहीं बताया क्योंकि एक तरफ तो उनमें विश्वास की कमी थी और दूसरी ओर दूसरा अभी तस्वीर को पूरा करने के लिए कुछ घटनाओं को पूरा करना अभी बाकि था। चेलों को उसे छोड़कर जाना और उसका इनकार करना अभी बाकि था। यीशु पर अभी आरोप लगाया जाना, क्रूस पर चढ़ाया जाना और दफनाया जाना अभी बाकि था। उसके बाद, उसे मृतकों में से जीवित भी होना था, स्वर्ग में उठा लिया जाना और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान होना और अपने लोगों पर पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना बाकि था। वह केवल इन सारी घटनाओं के बाद पवित्र आत्मा को उन पर उण्डेल सकता था! यीशु मसीह का प्रकाशन उस समय तक पूरा नहीं हुआ था!

(2) सत्य का प्रकाशन यीशु मसीह की आत्मा के द्वारा पूरा हुआ (पद 13)।

यीशु ने कहा, "परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।" पवित्र आत्मा उन पर कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं करेगा वरन वह एक मार्गदर्शक, एक गाइड के समान उनकी अगुवाई करेगा। वह उनके सामने सत्य का अंश नहीं वरन पूर्ण सत्य प्रगट करेगा। भविष्य में सत्य बताने या बाइबल में कोई प्रकाशन जोड़ने के लिए कोई भविष्यद्वक्ता नहीं आयेगा!

आज कल कुछ लोग आधी सच्चाई या किसी विशेष सच्चाई पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। पवित्र आत्मा एक सत्य की बलि चढ़ाकर दूसरे सत्य को स्थापित नहीं करता। पौलुस कहता है, "क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका" (प्रेरितों 20:27)!

(3) सत्य का प्रकाशन नया नियम लिखे जाने तक पूरा हो चुका था (पद 13-15)।

यीशु मसीह द्वारा की गयी भविष्यद्वाणी पूरी हो चुकी थी। उसके द्वारा की गयी प्रतिज्ञा कि पवित्र आत्मा आएगा प्रेरितों के काम में पूरी हो चुकी थी। "पूर्ण सत्य का प्रकाशन" चारों सुसमाचारों और नये नियम में प्रेरितों के काम लिखे जाने तक पूरा हो चुका था (1 पतरस 3:1-2,15-16)। और उसके द्वारा की गयी प्रतिज्ञा कि वह आकर भविष्य में होने वाली बातों को बताएगा, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पूरी हो चुकी थी (प्रकाशितवाक्य 1:1)।

आज जब कभी पवित्र आत्मा मसीहियों की अगुवाई करता है, वह सदैव बाइबल से सहमत होता है उसके विरूद्ध नहीं! जब कभी शिक्षा दी जाती या प्रचार किया जाता है तो "पवित्र आत्मा की तलवार" हमेशा बाइबल ही होती है (इफिसियों 6:17)!

(4) पवित्र आत्मा मसीह की महिमा करता है (पद 14)।

पवित्र आत्मा लोगों का ध्यान कभी अपनी ओर नहीं खींचता। वह मसीहियों को मसीह का प्रचार करने की शक्ति प्रदान करता है। वह मसीहियों के जीवन में मसीह द्वारा किये गये उद्धार के काम का इस्तेमाल करता है। उसकी शिक्षाओं का विषय यीशु मसीह द्वारा किये गये काम, किये जा रहे काम और भविष्य में किये जाने वाले काम होता है। इसे मैंने अपने व्यक्तिगत जीवन में भी महसूस किया है कि पवित्र आत्मा मुझे बाइबल की बातों को समझने में सहायता करता और यीशु मसीह को ज्यादा से ज्यादा प्रेम करना सिखाता है।

कदम 3. प्रश्न। व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 16:1-33 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

16:2-4

प्रश्न 1. **यूहन्ना 14,15,16 अध्याय में आपस में क्या सम्बन्ध है?**

ध्यान दें। यूहन्ना अध्याय 14 में, ज्यादा ज़ोर *आराम* (प्रोत्साहन) यूहन्ना अध्याय 15 में, ज्यादा ध्यान *चितौनी* देने में *(प्रेरणा व चेतावनी देने)* दिया गया है। लेकिन यूहन्ना 16 में, ज्यादा ज़ोर *अनुमान* लगाने में *(भविष्यद्वाणी)* लगाया गया है। यीशु ने संकेत दिया था कि यहूदी चेलों को सताएगें (यूहन्ना 16:2-4)। उसने इस बात का भी संकेत दिया था कि वह स्वयं उन्हें छोड़कर चला जाएगा (शारीरिक रूप में) (यूहन्ना 16:7,16,28)। उसने बताया था कि पवित्र आत्मा आएगा और वह संसार बहुतायत से प्रभावित करेगा (यूहन्ना 16:8-11) और मसीह के चेलों की सम्पूर्ण सत्य में अगुवाई करेगा (यूहन्ना 16:13-15)। उसने उन्हें बताया था कि ऐसा होने से पहले चेले कुछ समय के लिए विलाप करेगें और शोक मनाएंगे, लेकिन उनको शोक कुछ ही समय के बार आनन्द में बदल जाएगा (यूहन्ना 16:17-23)। और उसने यह भी भविष्यद्वाणी की थी कि उसी रात्र सारे चेले तितर बितर हो जाएगें (यूहन्ना 16:31-32)।

अध्याय 16 का चरित्र *भविष्यसूचक* था जिससे चेलों को आशा दिलाई गयी थी कि वे निराशा और दु:ख पर जयवन्त होगें। हो सकता है कि सताव के कारण, चेले ऐसा विचार करने लग जाएं कि क्या यह वास्तव में सत्य है कि यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है। इस प्रकार की निराशा और प्रश्न उनके विश्वास को खत्म कर सकते थे।

चेलों को यह समझकर अचम्भा नहीं करनी चाहिए कि कोई अनोखी बात उनके साथ हो रही है (1 पतरस 4:12)। यीशु मसीह अपने चेलों को नये नियम के काल के लिए तैयार कर रहे थे। नया नियम यीशु मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच का समय है। इस काल में मसीहियों पर दबाव और सताव होगा, लेकिन इसके साथ ही साथ अभक्ति से भरे इस संसार में गहरा प्रभाव पड़ेगा और पाप, धार्मिकता और न्याय

के प्रति निरूत्तर होगें। और अन्त में यह नये नियम का युग तब समाप्त हो जाएगा जब यीशु मसीह अपने दूसरे आगमन पर पूर्ण विजय का पताका फहराएंगे। "संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाधों, मैंने संसार को जीत लिया है (*और फिर संसार इसी जीती हुई अवस्था में बना रहेगा*)(परफेक्ट टेन्स में)।"(यूहन्ना 16:33)!

16:16-22

***प्रश्न 2.* वह "थोड़ी देर में" क्या है जिसमें यीशु मसीह चला जाएगा और उसके चेले रोएगें और विलाप करेगें?**

ध्यान दें। वह समय कब था जब यीशु मसीह के चेले उसे नहीं देख पाए? चेले आपस में सोच विचार करने लगे कि यीशु मसीह की निम्नलिखित बातों का क्या मतलब है:

- इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ और तुम में कोई मुझे फिर न देखेगा" (यूहन्ना 16:10)।
- "थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी देर में देखोगे" (यूहन्ना 16:16)।
- क्योंकि मैं अपने पिता के पास जाता हूँ" (यूहन्ना 16:17)।
- "तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा; तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा" (यूहन्ना 16:20)।

यीशु मसीह ने स्वयं कहा कि उन्हें बुरे संसार के द्वारा जल्द ही तिरस्कार का सामना करना पड़ेगा। पहले तो उसके चेले उसे *अपनी शारीरिक आंखों से* तीन दिनो तक नहीं देख पाएंगे (अर्थात शुक्रवार की शाम से लेकर तड़के रविवार तक)। वह (उसकी देह) कब्र में पड़ी रहेगी। उसकी मानवीय आत्मा पिता के पास स्वर्ग में थी (लूका 23:43,46)।

उसने पुन: जीवित होने के बाद उन्होंने चालीस दिनों तक अपनी शारीरिक आंखों से देखा (प्रेरितों 1:3)। उसके बाद वे उसके स्वर्गारोहण से लेकर पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने तक पूरे दस दिन *अपनी आंखों से नहीं देखने वाले थे।* लेकिन यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की थी, "मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा; मैं (यीशु मसीह) तुम्हारे पास वापस आऊंगा" (यूहन्ना 14:18)। उसके स्वर्गारोहण के बाद पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने पर वे *उसे पुन: अपनी आत्मिक आंखों से देखेगें,* क्योंकि "वह जगत के अन्त तक सदैव उनके साथ रहेगा (वर्तमान संसार में)" (मत्ती 28:20)।

बहुत से ऐसे मसीही हैं जो यह सोचते हैं कि उन्हें पूरे नये नियम काल में उपवास करके ही रहना चाहिए। यीशु ने कहा, "क्या बाराती, जब तक कि दूल्हा उनके साथ है, शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएगें जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेगें।"(मरकुस 2:19-20; मत्ती 9:15-17)। केवल उन्हीं दिनों में यीशु अपने चेलों के साथ नहीं था, वे रोये और उन्होंने शोक किया और उपवास किया। लेकिन उसके मृतकों में से जीवित होने के बाद और खास तौर पर पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद से यीशु लगातार उनके साथ था। नये नियम का युग विलाप करने या उपवास करने का युग नहीं वरन आनन्द और उत्सव मनाने का युग है!

---

1 बाइबल में इलिमास टोन्हे जैसे भावी कहने वाले (प्रेरितों13:6-8), इस्लाम में मुहम्मद और मोर्मोनवाद में जोसफ स्मिथ सत्य में कुछ बढ़ा नहीं सकते। जो लोग इस बात का दावा करते हैं कि बाइबल में पाया जाने वाला सहायक (यूहन्ना 14:16-17) मुहम्मद है, तो वह गलत हैं, क्योंकि सहायक का अर्थ बाइबल में स्पष्ट तौर पर **पवित्र आत्मा को दर्शाता है जो यीशु मसीह की गवाही देता है** (यूहन्ना 15:13-15)। यहां तक कि मुहम्मद ने भी खुद कहा है कि यीशु(ईसा) "अल्लाह का कलाम है" (सूरा 4:171)। इसकी तुलना बाइबल में यीशु के बारे में मुहम्मद से भी 700 वर्ष पहले कही बातों से करें। **"यीशु मसीह ही परमेश्वर का वचन है"**(यूहन्ना 1:1) और "**यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है"** (यूहन्ना 14:18; रोमियों 8:9-10)।

जर्कयाह 8:19 में 420 ई.पू पहले ही भविष्यद्वाणी कर दी गयी थी, "चौथे, पांचवें, सातवें, और दसवें, महीने में जो जो उपवास के दिन होते हैं, वे यहूदा के घराने के लिए हर्ष और आनन्द और उत्सव क पर्वों के दिन हो जाएंगे।"(ईस्टर के बारे में सोचें, जो स्वर्गारोहण और पिन्तेकुस्त का दिन है!)। अत: "थोड़ी देर" यीशु मसीह की मृत्यु और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बीच समयान्तराल का हवाला देता है (यह हवाला यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक पूरे नये नियम के युग की ओर इशारा नहीं करता है)! उसके मृतकों में से जी उठने से लेकर पवित्र आत्मा (जो यीशु मसीह का आत्मा है)(1 पतरस 1:11) के उण्डेले जाने तक कोई भी चीज़ उनके आनन्द को उनसे नहीं छीन सकती (प्रेरितों 13:52; गलातियों 5:22)।

16:23-24

प्रश्न 3. यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। यीशु मसीह के नाम करने के दो पक्ष हैं:

(1) यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का अर्थ मसीह के कामों के आधार पर प्रार्थना करना है।

परमेश्वर यीशु मसीह द्वारा किये गये कामों के आधार पर हमारी प्रार्थनाओं के आधार पर *देता है।* यूहन्ना 16:23 का और भी ज़्यादा सटिक अनुवाद होगा, "उस दिन तुम मुझसे (यीशु से) कुछ नहीं मांगोगे। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो भी कुछ तुम मेरे नाम से पिता (परमेश्वर) से मांगोगे वह तुम्हें देगा। यीशु मसीह ने उनसे प्रतिज्ञा की कि परमेश्वर उन्हें वह उद्धार प्रदान करेगा जिसका केन्द्र बिन्दु यीशु मसीह होगा! परमेश्वर पिता, यीशु मसीह के प्रेम व यीशु मसीह द्वारा हमारे पापों के लिए किये गये प्रायश्चित की वजह से हमें पापों की क्षमा और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर प्रदान करते हैं।

यीशु मसीह क्रूस पर किये गये अपने कार्यों के माध्यम से परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक मध्यस्थ है। मध्यस्थ के रूप में यीशु मसीह ने परमेश्वर की ओर से लोगों के लिए रास्ता खोल दिया। मनुष्य और परमेश्वर के बीच में अब कोई दूसरा मध्यस्थ नहीं है (1 तीमुथीयुस 2:5)! दूसरे धर्म के लोगों के लिए परमेश्वर की ओर से खुला हुआ कोई रास्ता नहीं है। दूसरे धर्मों मे पापों का प्रायश्चित नहीं किया गया है और परमेश्वर से अलगाव को दूर करने के लिए कोई प्रार्थना नहीं की गयी है (यशयाह 59:1-2)! परमेश्वर उन पााापियों की प्रार्थनाओं को नहीं सुनता जिनके पाप क्षमा नहीं किये गये हैं (भजन 66:18, नीतिवचन 1:23-33, यशायाह 1:15; 59:1-2)! उनके पाप आज भी बाइबल के परमेश्वर व मनुष्यों के बीच में दीवार खड़ी करके रखे हुए हैं। यदि यीशु मसीह पापों के लिए नहीं मरा है, तो परमेश्वर की सिद्ध पवित्रता और धार्मिकता उसे अपवित्र और अधार्मिक लोगों को क्षमा करने तथा उनकी प्रार्थनाओं को सुनने से रोकेगी।[2]

मसीही लोग यीशु मसीह द्वारा किये गये कामों के आधार पर ही प्रार्थना करते हैं। यूहन्ना 16:24 में लिखा है, "अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।" चेलों के मसीही बनने से पहले, वे पुराने नियम में प्रभु की निज प्रजा कहलाते थे, अर्थात, इस्राएल और जब वे प्रार्थना किया करते थे तो सीधा परमेश्वर से प्रार्थना किया करते थे। उदाहरण के लिए, भजन 17 में दाऊद ने अपनी प्रार्थना यह कहते हुए शुरू की, "हे यहोवा परमेश्वर, सच्चाई के वचन सुन, मेरी पुकार

---

[2] परमेश्वर उनकी प्रार्थनाएं सुनता है, लेकिन तब तक उनका जवाब नहीं देता, जब तक कि वे पश्चाताप करके यीशु की ओर नहीं फिर जाते।

की ओर ध्यान दे।" पुराने नियम में परमेश्वर लोगे परमेश्वर को "यहोवा परमेश्वर" या केवल "परमेश्वर" कह कर सम्बोधित किया करते थे। उन्होंने कभी अपनी प्रार्थनाओं को यीशु मसीह के नाम से समाप्त नहीं किया। वे मसीह अर्थात यीशु मसीह की बाट जोह रहे थे, जिसमें होकर परमेश्वर सारी मानवजाति को आशीष देने वाला था (उत्पत्ति 22:18)।

लेकिन अब मसीहा आ चुका था। वह पापों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस पर अपनी जान देने के अन्तिम क्षण पर था। उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान वह रास्ता ठहरने वाला था जिसके द्वारा परमेश्वर देश देश के लोगों को आशीष देगा। एक मध्यस्थ होने के नाते यीशु मसीह ने मनुष्यों से परमेश्वर के पास जाने का रास्ता खोल दिया। यदि यीशु मसीह पापों के लिए अपनी जान नहीं देते, तो अपवित्र और अधार्मिक लोगों को कभी भी पवित्र और धर्मी परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाती (यशायाह 59:1-3; 1 तीमुथीयुस 6:16)! लेकिन इफिसियों 2:18 और 3:12 के अनुसार मसीहियों को अब परमेश्वर पिता के पास जाने की अनुमति है और वे आज़ादी और भरोसे के साथ उसके सम्मुख आ सकते हैं। इब्रानियों 4:16 में लिखा है, "इसलिए आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकार चलें, कि हम पर दसया हो, और वह अनुग्रह पाएं जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।"

(2) यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का अर्थ परमेश्वर की इच्छा में होकर प्रार्थना करना है।

1 यूहन्ना 5:14 में लिखा है, "और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह हैं ; कि यदि हम उस की इच के अनुसार कुछ मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है।

एक मध्यस्थ के रूप में, यीशु मसीह ने परमेश्वर के चरित्र और स्वभाव को प्रगट किया। प्रार्थना करने के लिए परमेश्वर की इच्छा और उसके चरित्र को जानना जरूरी क्यों है। कई लोग मूर्तियों पर विश्वास करते हैं। इन मूर्तियों चरित्र यह है कि वे इन्सानों के द्वारा बनायी गयी और मृतक हैं। वे प्रार्थना (भजन 115:6) को सुन और उसका जवाब नहीं दे सकती और वे इन्सानों के लिए कुछ भला (या बुरा) नहीं कर सकती (यिर्मयाह 10:5)। दूसरे लोग एक देवी देवताओं पर विश्वास करते हैं जिनके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। कोई नहीं जानता कि उनसे किस तरह की जाती है। लेकिन बाइबल के जीवते परमेश्वर ने अपने चरित्र को प्रगट किया है। उदारहण के लिए, उसके पवित्र होने के कारण हम जानते हैं कि हम अपवित्र चीज़ों के लिए उससे प्रार्थना नहीं कर सकते। हम जानते हैं कि हम उससे क्षमा मांग सकते हैं। वह दयावन्त है, इसलिए हम उससे क्षमा मांग सकते हैं। वह विश्वासयोग्य है, इसलिए हम जानते हैं कि हम उससे सहायता मांग सकते हैं। इसलिए जितना बेहतर हम परमेश्वर के चरित्र को जानते है, उतना ही बेहतर ढंग से हम प्रार्थना कर सकते हैं!

एक मध्यस्थ के रूप में, यीशु मसीह ने भी परमेश्वर की इच्छा को प्रगट किया। यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने के लिए, हमें मसीह की प्रगट इच्छा में होकर प्रार्थना करना ज़रूरी है। बाइबल में प्रगट *उसकी इच्छा* के अनुसार प्रार्थना करें और उसकी इच्छा से जुड़ी सारी चीजों के लिए उस पर विश्वास करते हुए प्रार्थना करें। यदि प्रभु यीशु मसीह प्रभु और स्वामी है, तो मसीही लोग किसी भी ऐसी वस्तु के लिए प्रार्थना नहीं करेगें जो उसकी इच्छा के विरूद्ध हो, क्योंकि उन प्रार्थनाओं से वह खुश नहीं होगा।

इसलिए, यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का अर्थ मसीह द्वारा प्रगट की गयी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करना और हर एक उस बात के लिए प्रार्थना करना जिससे परमेश्वर के राज्य और परमेश्वर की महिमा में वृद्धि होती हो!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 16:1-33 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 16:1-33 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

16:8-10। सुसमाचार साझा या प्रचार करते समय इस बात के लिए पूरी तरह से आश्वस्त रहें कि परमेश्वर स्वयं पवित्र आत्मा के द्वारा लोगों के पापों का खुलासा करेगें, उन्हें बाइबल की सच्चाई को समझाएगें और अगर वे प्रतिउत्तर देने में असफल होते हैं तो उन्हें निरूत्तर करेगें।

16:12-15। यीशु मसीह के पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होने के बाद भी, यीशु ने अपने प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के द्वारा बहुत सी बातों को प्रगट किया। इन सारी बातों को नये नियम में लिखा गया और उन्हीं के साथ उसे समाप्त भी किया गया है।

16:13। पवित्र आत्मा आज भी आपकी सत्य में अगुवाई करता है, लेकिन मान्यता दी जाने वाली उन सच्चाईयों में नहीं जो पहले से ही बाइबल में प्रगट सच्चाई के खिलाफ हो! इसके अलावा वह आप पर कोई भी ऐसे सत्य को प्रगट नहीं करता जिसे आप बाइबल में जोड़ सकें।

16:19-22। आप आनन्द के जीवन को जी सकते हैं, क्योंकि यीशु मसीह जी उठा और जीवित और उपस्थित है।

16:24। आप भरोसे के साथ प्रार्थना कर सकते हैं, क्योंकि यीशु परमेश्वर और आपके व आपके और परमेश्वर के बीच में एक मध्यस्थ है।

16:33। यह न भूलें कि आपको इस संसार में क्लेश होगें, लेकिन यीशु मसीह ने इस संसार को जीत लिया है और अब सारा संसार उसकी अधीनता में है। इसी कारण आप यीशु मसीह की शक्ति और उसकी प्रतिज्ञा से महान कार्य कर पा रहे हैं (यूहन्ना 14:12)।

2. यूहन्ना 16:1-33 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं इस बात को जानकर बहुत खुश और उत्साहित हूँ कि सताव और कष्टों का मतलब जरूरी तौर पर यह नहीं है कि मैंने परमेश्वर के विरूद्ध कुछ गलत किया है और परमेश्वर मुझे दण्ड दे रहे हैं। अब मैं इस बात को जान गया हूं कि सताव और क्लेश एक मसीही जीवन का हिस्सा है। यीशु मसीह ने पहले ही बता दिया था कि ऐसा होगा। इसलिए जब लोग मुझे सताते या मुझसे नफरत करते हैं तो मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए

---

3 सूराह 74:31 में लिखा है, "कि अल्लाह जिसको चाहें उसे दूर कर देता है, और जिसे चाहे उसकी अगुवाई करता है।

कि मेरे साथ कुछ अलग या अनोखा हो रहा है। मैं यीशु मसीह के दूसरे आगमन और धरती के नये होने का इन्तज़ार कर रहा हूं, जब सारे बुरे लोगों पर उसकी विजय खुले तौर पर सबके सामने प्रगट हो जाएगी!
मैं पूरी तरह समझ गया हूँ कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में यीशु द्वारा पवित्र आत्मा के कलीसिया पर उण्डेले जाने और धरती पर उसके प्रभाव की भविष्यद्वाणी पूरी हो गयी थी। मैं पूरी तरह से मानता हूँ कि पवित्र आत्मा ने मसीह के चेलों की सभी सत्यों में अगुवाई की, जिससे कि वे यीशु के जीवन व उसकी शिक्षाओं को लिख सकें और नये नियम में लिखी गयी पत्रियों के द्वारा हमें उद्धार के निमित्त मसीह के सम्पूर्ण कार्यों के बारे में सिखा सकें। मैं मानता हूं कि पवित्र आत्मा ने मसीह के चेलों को भविष्य में होने वाली बातों के बारे में बताया होगा और उन बातों को पौलुस, पतरस और यूहन्ना की पत्रियों और विशेषतौर पर प्रकाशितवाक्य में लिखा गया।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 16:1-33 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 16 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **याकूब 1-3** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(1) खर्च करने के द्वारा प्रेम करें: 2 कुरिन्थियों 12:14-15।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।
5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।